फॉरगेट मी नॉट

स्कैन करके विडीओ देखिए

Scan to watch

कहानी - रजनी सेखरी सिंबल
चित्रण – सत्यराज अय्यर
-आलोक प्रकाशन-

आज की कहानी है फॉरगेट मी नॉट जिसे हिंदी में हम गुल वफ़ा कहते हैं।
गुल वफ़ा एक नन्हा सा फूल है जिसे अगर ध्यान से देखा जाए तो शर्माकर छुपा रहता है। जैसे की कह रहा हो “फॉरगेट मी नॉट, मानो मुझे भूलना मत, मैं भी हूँ।”

एक बहुत ही प्यारा सा
फूल है फॉरगेट मी नॉट।

हल्के नीले रंग का बहुत ही छोटा फूल जो कि अक्सर पहाड़ों में, चट्टानों के पीछे...

पत्थरों के पीछे और घास
में छुपकर बैठा रहता है।

और पास आकर देखिये तो एक तितली या एक छोटी सी लेडी बर्ड उसके इर्द गिर्द घूमती रहती है।

फॉरगेट मी नॉट भी उसी के संग मस्ती से खेल रही होती है

और कोई भी आहट
सुन कर, दुबक कर
फिर से छुप जाती है।
कभी कभार गलती
से आपका पाँव गुल
वफ़ा पर पड़ गया
तो

वो फूल इतना
शक्तिशाली है कि
जैसे ही आप
अपना पाँव
उठाओगे
वो सीधा टहनी
पर खड़ा हो जाता
है

और आपकी
तरफ ताकता है
और कहता
है...

मैं भी हूँ..
फॉरगेट मी नॉट

बहुत साल पहले
जब सभी फूल
स्कूल में पढ़ते थे
तो...

स्कूल में फॉरगेट मी
नॉट सबसे पीछे के
डेस्क पर बैठा करती
थी।

सबसे शर्माती थी,
छोटे-छोटे पिंक रंग
की उसकी 5 पंखुड़िया
थीं।

वह थी तो बहुत
होशियार, लेकिन
बहुत शर्मीली भी
थी।

अब जब कभी मास्टर जी क्लास में उससे कुछ पूछते...

...तो वो शर्माकर अपना चेहरा नीचे की ओर कर लेती थी और...

...और भी ज्यादा पिंक हो जाती थी।

गुल वफ़ा के क्लास के
मास्टर जी एक बहुत बड़े
मोटे से गेंदे के फूल थे।

अब उनसे तो उसे
डर भी लगता था,
शर्म भी आती थी।

एक दिन जब मास्टर
जी उनको पढ़ा रहे थे
तो बाहर बहुत जोर से
बादल गरजे।

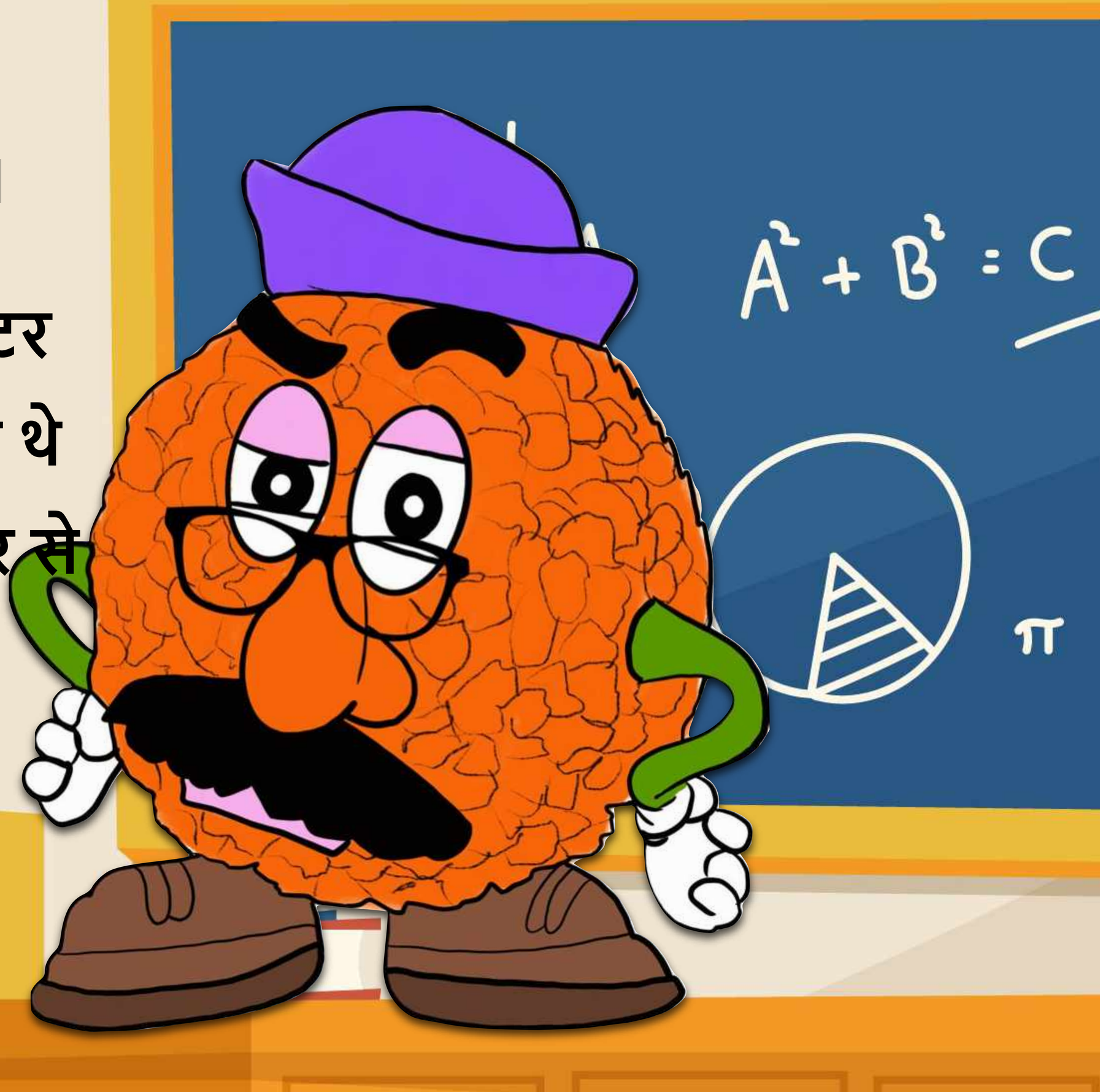

थोड़ी देर में अचानक
बिजली भी चमकी और
बिल्कुल अँधेरा होने लगा।

मास्टर जी ने अपने चश्मे से खिड़की के बाहर देखा तो सोचा "भई आज तो बहुत जोर से बारिश आने वाली है, शायद तूफान भी होगा।"

अब पहाड़ पर तो अँधेरा बहुत जल्दी हो जाता है और अगर बादल हो और बारिश का मौसम हो तब तो और भी जल्दी।

तो गेंदे मास्टर ने सोचा क्यों ना आज स्कूल जल्दी से बंद कर दे और फिर सभी फूलों को भी तो अपने अपने घर पहुँचाना है मुझे।

तब गेंदा जी ने कहा - "आज हम स्कूल की जल्दी छुट्टी करेंगे" अब सब फूल अपने अपने बस्ते बांधों, सामान रखो ताकि सब बच्चे अपने घर जल्दी पहुँचे।

सभी बच्चों ने अपना-अपना बस्ता बांधना शुरू कर दिया।

हमारी गुल वफ़ा या फॉरगेट मी नॉट क्योंकि छोटी थी तो धीरे धीरे काम करती थी।

जब बाकि बच्चे बस्ता उठाकर
एक दूसरे का हाथ पकड़ कर
लंबी लाइन से स्कूल के बाहर
निकलने लगे तो...

...फॉरगेट मी नॉट
थोड़ा पीछे रह गयी

वो डर गयी और सब बच्चों के पीछे भागने की कोशिश करने लगी।

चलते चलते सभी फूल नदी के पास पहुँच गए।

अब बारिश के कारण सारी नदियां इतनी जोर से भरने लगीं कि लगा कि बस आज तो भइया बाढ़ आई।

गेंदा मास्टर जी ने एक बड़ी कश्ती देखी और उसमें सभी फूलों को बैठा दिया और ढूढ़ने लगे कि कोई फूल रह तो नहीं गया।

चूँकि वो बहुत ही छोटी थी, इसलिये फॉरगेट मी नॉट बेचारी पीछे रह गयी थी और उसकी ओर तो किसी का ध्यान गया ही नहीं।

मास्टर जी ने देखा की सब बच्चे बैठ गए हैं तो उन्होंने कश्ती वाले को चलने को कहा

और दूसरी तरफ पहुँचकर सभी बच्चों को अपने अपने घरों में आराम से पहुँचा दिया।

अब हमारी छोटी सी
फॉरगेट मी नॉट बेचारी भीगती
हुई नदी के पास पहुँची, तो उसने
देखा कि कश्ती तो चली गयी
थी।

और जोर से जब बादल गरजा,
बिजली कड़की तो डर के मारे
वो एक बड़े से पत्थर के पीछे
जाकर छुप गयी।

बहुत देर तक बारिश होती रही और फॉरगेट मी नॉट बेचारी भीगती रही,

ठण्ड में धीरे धीरे उसकी सारी पंखुड़ियां गुलाबी रंग के बजाय अब नीले रंग की होने लगीं।

धीरे धीरे फॉरगेट मी नॉट पूरी नीली हो गयी।

आप भी जब सर्दी में घर पर स्वेटर ठीक से
नहीं पहनें या बाहर ठण्ड में चले जायें...

...तो आपके हाथ भी
नीले हो जाते है
ओठ नीले हो जाते है

उसी तरह से हमारी फॉरगेट मी नॉट भी अब गुलाबी रंग के बजाय नीले रंग की पंखुड़ियों वाला फूल बन गयी।

दुबककर वह पत्थर के
पीछे छिपी रही और
जब बारिश बंद भी हो
गयी और...

...अगले दिन सूरज भी निकल गया तब भी वो वहाँ से नहीं निकली। वह इतना डर गयी थी।

अब इतने सालों बाद आज भी हमारी
छोटी सी, नन्ही सी, गुल वफ़ा पत्थरों के
पीछे छुप कर..

बर्फ से,

बारिश से,

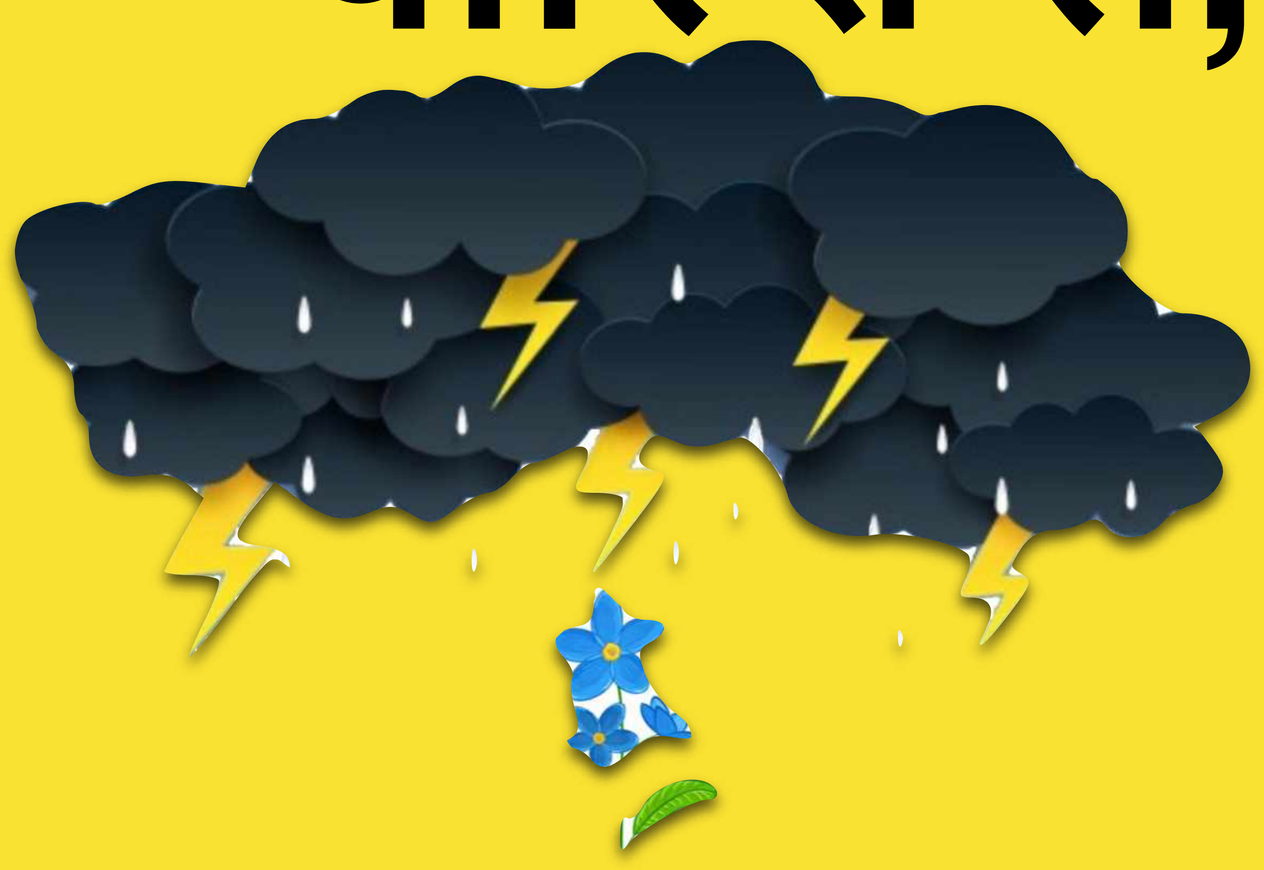

सर्दी से

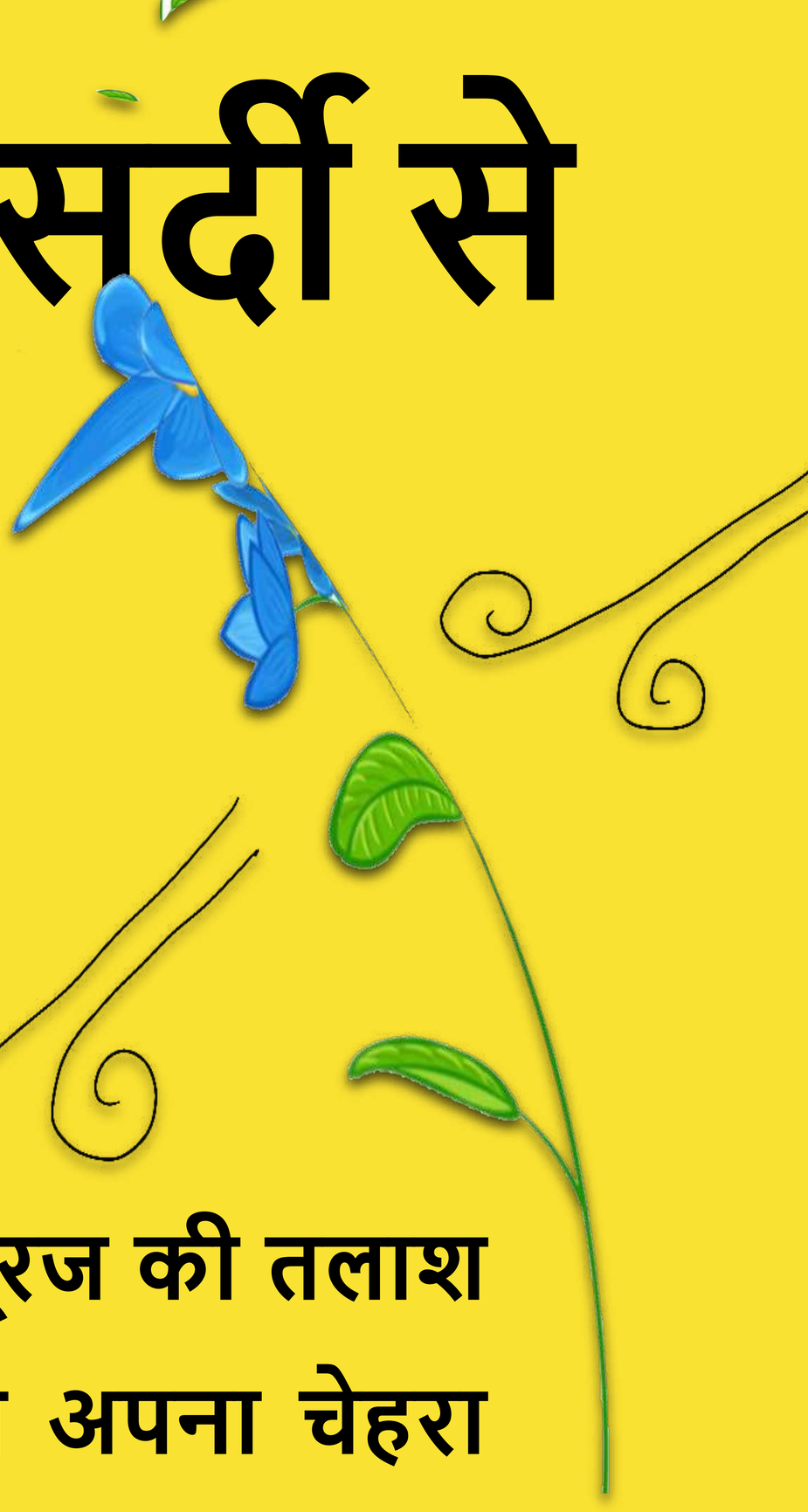

अपने आप को बचाती है। वो अक्सर सूरज की तलाश में पत्थर के पीछे से घास के अंदर से अपना चेहरा उठाकर झांकती भी रहती है।

कभी कभार गलती से वो हमारे
पाँव के नीचे आ जाती है।
जब हम अपना पाँव उठाते है...

...तो गुल वफ़ा सीधी खड़ी
हो जाती है, आपकी तरफ
ताकती है, और कहती है -

"फॉरगेट मी नॉट,
मैं भी तो हूँ।"

लेखिका के बारे में

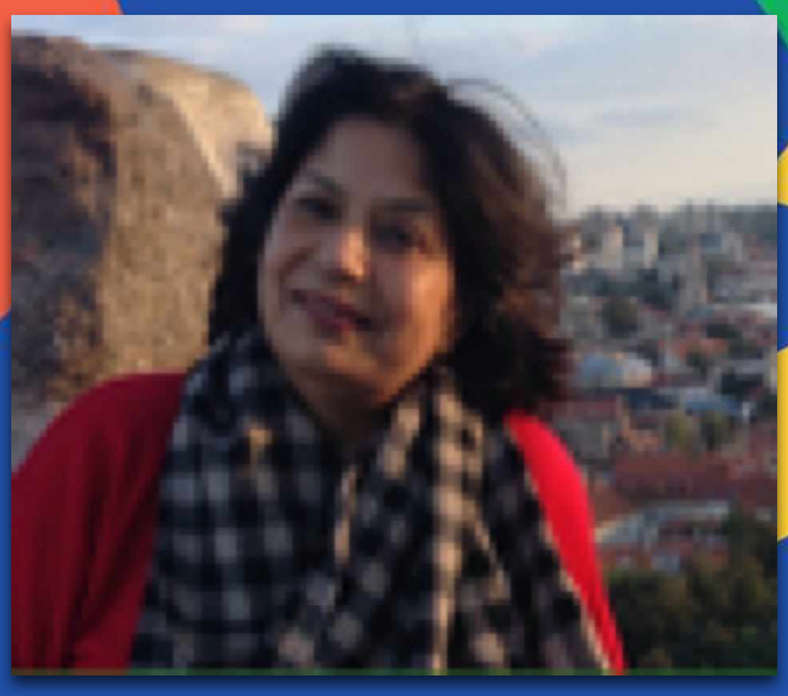

रजनी सेखरी सिबल

रजनी सेखरी सिब्बल भारतीय प्रशासनिक सेवा की 1986 बैच की टापर हैं और कुछ समय पहले भारत सरकार में सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। उन्हें उनकी प्रतिबध्दता और साहस के लिये वर्ष 2013 में 'अनसंग हीरो' कैटेगरी में इंडियान ऑफ द इयर का पुरस्कार मिला है।

रजनी ने भारत सरकार में मत्सय पालन विभाग की सचिव एवं उसके पूर्व गृह मंत्रालय तथा कौयाल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय में अपर सचिव के रूप में काम किया है। वे कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव थीं तथा मैक्स इंडिया हैल्थ इंश्योरंस में संचालक थीं। उन्होने हरियाणा सरकार में भी विभिन्न पदों पर सेवा दी है।

रजनी मनोविज्ञान तथा अर्थशास्त्र में स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें प्रमुख हैं: *'Tools for Monitoring'; 'Clouds End and Beyond'*; *'Kamadhenu'*; *'Fragrant Words'*; *'Are You Prepared for a Disaster?'*; *'The Haunting Himalayas'*.

Email: rajnisekhrisibal@gmail.com